प्रियप्रवास की कलात्मक विशेषताएँ

कंचन कुमारी
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा बिहार

हरिऔध जी ने जब हिंदी साहित्य सेवा प्रारंभ की, तब ब्रज भाषा में कविता लेखन की परपरा थी। भक्ति काल के पश्चात् महाकाव्य लेखन की परंपरा कमजोर पड़ गई थी। इस परंपरा को पुनः जीवित करने का कार्य अयोध्या प्रसाद उपाध्याय जी द्वारा किया गया। इन्हे आधुनिक कविता का अग्रदूत माना जाता है।

उपाध्याय जी के पूर्वज दिल्ली में निवास करते थे। किन्हीं कारणों से बाद में वे आजमगढ़ के निजामाबाद में रहने लगे। अयोध्या प्रसाद उपाध्याय जी के एक पूर्वज पण्डित गुरूदयाल उपाध्याय ने व्यक्तिगत कारणों से सिक्ख संप्रदाय में दीक्षा ग्रहण कर ली थी। तत्पश्चात् इस परिवार का उपनाम 'सिंह' लिखा जाने लगा। कविवर हरिऔधजी के पिता का नाम भोला सिंह और माता जी का नाम रूक्मिणी देवी था। इनके पिता अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे जबकि माता जी धार्मिक महिला थी। हरिऔध जी के चाचा ब्रहम सिंह उच्च कोटि के विद्वान ज्योतिष विद्या के प्रवीण और प्रसिद्ध व्यक्ति थे। हरिऔध जी को बाल्यावस्था में अपनी माता एवं चाचा का संरक्षण प्राप्त था। अतः इन दोनों के व्यक्तित्व का हरिऔध जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। एक ओर उनकी रूचि धार्मिक घटनाओं में रही तो, संस्कृत के प्रति उनका प्रेम सर्वविदित है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय जी का जन्म निजामाबाद में 15 अप्रैल 1865 ई॰ को हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था उनके चाचा ने की थी। वर्ष 1879 में प्रथम श्रेणी में वनक्युलर मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की। इससे इन्हे छात्रवृति मिलने लगी। हरिऔध जी उच्च शिक्षा के लिए काशी के वींस कॉलेज गए। यहाँ रहकर उन्होंने संस्कृत, फारसी, बंगला आदि भाषाओं का अध्यय्न किया। अनंत कुमारी से इनका विवाह 17 वर्ष की आयु में हुआ। कानून की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् कानूनगों के रूप में अपनी सेवा शुरू की। इस पद पर रहते हुए भी हरिऔध जी की काव्य साधना चलती रही। साहित्य सेवाओं से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हे अपना सभापति निर्वाचित किया। इनकी प्रमुख कृति प्रियप्रवास पर इन्हे 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' सम्मान प्राप्त हुआ। हरिऔध जी ने दो गद्थ रचनाएँ भी की है।

1) अधखिला फूल और 2) ठेठ हिंदी का ठाठ।

'रसकलश' नाम की रचना काव्यशास्त्री के रूप में की। उनका योगदान कवि के रूप में अधिक है। उनके प्रमुख कृति का निम्नांकित ढंग से रेखांकित किया जा सकता है: -

श्री कृष्ण शतक, प्रेमाम्बु प्रवाह, प्रेमाम्बु प्रसज्ञ, प्रेम प्रपंच, कल्पलता, पारिजात, ग्राम गीत, बाल कविता, वैदेही वनवास, हरिऔध सतसई।

इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण 'प्रियप्रवास' है। इसे आधुनिक काल और खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है। रच रचना काव्य कथानक, अभिमंचन शैली और भाषा आदि की दृष्टि से यह रचना मौलिक एवं महत्वपूर्ण है।

कला पक्ष

कविता करने के लिए व्यक्ति के अन्दर भावुकता और विचारशीलता दोनों आवश्यक है। कवि अपने अनुभव को कविता के माध्यम से व्यक्त करता है। अच्छी कविता वह होती है जो पाठक को रसानुभूति कराती है। काव्य के दो पक्ष होते हैं अनुभूति तथा अभिव्यक्ति। काव्य के चार तत्वों को (रागात्मक, कल्पना, बुद्धि और शैली) को इन्ही पक्षों से संबंधित माना जाता है। अच्छी कविता में रचनात्मक तत्व की प्रधानता होती है।

प्रियप्रवास कार ने अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों का सुन्दर समन्वय किया है। वे बड़ी ही सहजता और चतुराई से अपनी बात पाठकों तक सम्प्रेषित कर देते हैं। इस काव्य के कल पक्ष का हम निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत अनुशीलन कर सकते हैं।

उदात्त शैली- इस काव्य की शैली उदात्त है इसमें संस्कृत के वर्ण वृतो का प्रयोग किया गया है। संस्कृत की पदावली का प्रयोग करते हुए कवि ने भाषा की गौरवशाली बनाया। प्रियप्रवास के काव्यतत्व में बदलाव इसमें प्रयुक्त छंदों के कारण ही संभव हो पाया है। कवि ने प्रथम पद में एक ही छंद का प्रयोग किया है तो नवम सर्ग में छंदो की विविधता देखने योग्य है। कवि ने विषयानुकूल छंदों का चयन किया है। इस काव्य में प्रयुक्त छंदो का संक्षिप्त परिचय निम्नवत् है।

मन्द्रा कान्ता - यह एक वर्णिक समवृत छंद होता है जिसमें 17 वर्ण होते हैं। जो कि भगण, भग्ण, नगण, तगण, तगत और दो गुरू वर्ण के क्रम में होते हैं।

धीरे-धीरे दिन गत हुआ पदिनीमी नाथ डूबे।
दोषा आई फिर गत हुई दूसरा बार आया।
यों ही पीतीं विपुल घड़ियाँ औ कई बार बीते।
कोई आया न मधुपुर से औ ने गोपाल आदे।

उपरोक्त पद मन्द्रा कान्ता छंद का उदाहरण है। इस छंद की यह विशेषता होती है कि यति 10 एवं 7 वर्णो पर है। संस्कृत साहित्य में यह छंद काफी लोकप्रिय रहा है। हरिओध जी ने बाल्यावस्था में संस्कृत का गहन अध्ययन किया था। यही कारण रहा है कि जब प्रियप्रवास की कथायोजना कवि द्वारा की गई तो इस सिद्धस्त कवि ने दिल खोल कर अपने इस महाकाव्य में इस छंद का प्रयोग किया।

वंशस्थ छंद - यह भी एक वणिक छंद है। इसकी पहचान यह है कि इसमें चार चरण या पद होते हैं। इस पदों या चरणों में बारह अक्षर होते हैं। निम्न पद इसका उदाहरण है।

अनेक गाये तृण त्याग दौड़ती।
सपत्ल जाती वर-यान पास थीं।
परंतु पाती जब थीं न श्याम को।
विषादिता हो पड़ती नितांत थीं।

इसका क्रम है - जगण, तगण, जगण एवं रगण।

मालिनी - यह एक वर्णकि सम छनद है। इसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह वर्ण होते है जिनका क्रम नगण, नगण, मगण, थगण तथा यगण होता है।

मधुकर सुन तेरी श्यामता है न वैसी
अति अनुपम जैसी श्याम के गात की है।
पर जब-जब आँखे देख लेती तुझे हैं।
तब-तब सुधि आती श्यामली मूर्ति की है।

यहाँ राधा द्वारा श्याम के सौंदर्य का वर्णन इसी छंद में व्यक्त किया गया है।

वसंततिलका - यह भी समवर्ण वृत छंद है। यह चौदह वर्णों वाला छंद है जिसमें तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरूओं के क्रम में प्रत्येक चरण की रचना की जाती है। उद्धव के ब्रज आगमन को कवि ने इसी छंद में दर्शाया है।

जो राज पंथ वन-भूतल में बना था।
धीरे उसी पर सधा रथ जा रहा था।
हो-हो विमुग्ध रूचि से अवलोकते थे।
अधो छटा विपिन की अति ही अनूठी।

शार्दूलविक्रीड़ित- यह उन्नीस अक्षरों का वर्णवृत छंद है इसमें चार चरण होते हैं। 12 वर्णो के बाद चरणांत में यति होती है। गणों का क्रम मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण होता है।

प्राणी है यह सोचता समझता मैं पूर्ण स्वाधीन हूँ।
इच्छा के अनुकूल कार्थ सब मैं हूँ साध लेता सदा।
ज्ञाता है कहते मनुष्य वश में है काल कर्मादिके।
होती है घटना प्रवाह पतति स्वाधीनता यंत्रिका।

इसमें कहीं गई बात पाठक द्वारा सहजता से ग्रहण किया जाता है।

द्रुतविलम्बित - इस छंद में चार चरण होते है प्रत्येक चरण में पहले चरण में दो तगण, एक जगण, एक जगण तथा दो गुरू के क्रम में 11 वर्ण होते हैं।

दूसरे चरण में जगण, तगण, जगण एवं रगण के क्रम में 12 वर्ष होते है।

तीसरे चरण में तगण, भगण, जगण तथा दो गुरू आकर 14 वर्ष होते है।

कृश कलवेर चिन्तित व्यस्त धी।
मलिन आन खिन्नमना दुखी
निकट ही उनके ब्रज-भूप थे।
विकलताकुशलता अभिभूत से

उपरोक्त उदाहरण में इसी क्रम का कवि द्वारा प्रयोग किया गया है। तथा चौथा चरण में एक नगण, दो भगण तथा एक रमण के क्रम में 12 वर्ष आते हैं।

कला विधान की दृष्टि से विचार करने पर यह ज्ञात होता होता है कि उन्होंने प्राचीन छंद को प्रयुक्त कर प्रियप्रवास में अपने काव्य कौशल में चार चांद लगाया। भावानुरूप अलंकार का प्रयोग कर मार्मिक स्थलों की वृद्धि की है। इसी विधान से काव्य की सरसता सुरक्षित रही है।

कवि ने राजनीतिक जीवन की भी झांकी प्रियप्रवास में प्रस्तुत की है। इस महाकाव्य में वियोग श्रृंगार की प्रधानता है। काव्य में जगह-जगह विरह वर्णन मिलता है। कभी-कभी कवि ने शांत रस की भी योजना की है। यत्र-तत्र वीर, रौद्र भयानक और वात्सल्य रस का उदाहरण मिल जाता है किंतु प्रधानता वियोग श्रंृगार की ही है।

संदर्भ ग्रंथ – 1- प्रियप्रवास - अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘‘हरिऔध’’
2- आधुनिक हिंदी महाकाव्यों में विप्रलंभ श्रृंगार
आलोपन मधु भवन।
3- हरिऔध जी की काव्य शैली, विमल अधहूजा
रामललापुरी, आत्माराम एवं तत दिल्ली, प्रथम संस्करण
1- प्रियप्रवास पृष्ठ संख्या - 111
2- प्रियप्रवास पृष्ठ संख्या - 212
3- प्रियप्रवास पृष्ठ संख्या - 109